ऋतुराज की सात कविताएं

मेरे हिस्से की शांति

जब कभी भी फेक दिया जाता हूं
पृथ्वी से बाहर
वह और भी सुंदर लगती है

जब जड़विहीन किसी पेड़ की तरह लटकता हूं
वर्तमान और भविष्य के बीच
तो चाहता हूं उसकी मिट्टी से अटूट जुड़ना
हवा पानी के लिए छटपटाता हूं इस तरह
कि जैसे कभी मिलन रात्रि में टीसता रहा हूं

मुझे बाहर मत फेंको
मुझे समेटने दो अपनी किताबें अपने बिखरे शब्द
एकमात्र मेरा जन्मना अधिकार है जो
मुझे उस शांति और निश्चिन्तता में सांस लेने दो
मेरे होने से कोई खतरा नहीं है
बल्कि सुरक्षा है नष्ट होने से बचे सौन्दर्य
और सरल चित्त मनुष्यता की

न जाने किससे कह रहा हूं कि छल मत करो
जबकि नये नये शक्ति केन्द्रों की अमूर्त स्वार्थपरताएं
पृथ्वी को हड़प करने में लगी हैं।

हम कुछ नहीं कहते

एक गंदी अंधेरी गली में परिवार पालता
वह अपनी नहीं दूसरों के संघर्ष की
अंतहीन कथा कहता है और एक दिन मर जाता है
हम कुछ नहीं कहते

मनोहारी चित्रण है किसी नदी का
किसी पहाड़ के विशालकाय दुखों का जलावन लिए
हिंस्र पशु द्वारा खा लिए जाने का
राजधानी में वे व्यापार करते हैं
ऐसी ही त्रासदियों से करोड़ों कमा कर
विदेश भ्रमण करते हैं
फिर भी हम कुछ नहीं कहते

हास परिहास गायब है
आंसू भी सूख चुके हैं
इस खलनायक समय ने मित्रता का
अपहरण कर लिया है
हम कुछ नहीं कहते

एक नौसिखिया युवा दृढ़ आत्मविश्वास के साथ
हमारे भविष्य का संधान करता है
अनुभवी खिलाड़ी पीछे हटते हैं
अभिनय खेल और राजनीति धर्म
जाति की इजारेदारी
सब कुछ यहां गड्डमगड्ड हुआ जा रहा है
हम कुछ नहीं कहते।

दूरगामी परिणाम

उसके चुपचाप मर जाने के दूरगामी परिणाम होंगे

अन्याय और गैरबराबरी पर बात करने से
कतरायेंगे लोग
पड़ोसी के घर के सामने कचरा फेकेंगे
और अपनी धूप के लिए पेड़ काट कर ले जायेंगे
फ्लू जैसी महामारी में डाक्टर प्रशासक

परीक्षक सब संगठित हो जायेंगे
खिलाड़ी जीत को बेच कर हंसते रहेंगे
अभिनेता कुछ नहीं बस पर्दे पर रोमांस करेंगे
सांप गले में फूल मालाएं डाले हवाखोरी करेंगे
सुंदरतम दिखेंगे दलाल
जूठन को बार बार परोसेंगे होटल
शब्दों के चोरों का राज होगा
वे ही खुद को सम्मानित करते रहेंगे

दूरगामी परिणाम होंगे एक ही समय में
दलितों और वामपंथियों की पराजय के
युवाशक्ति के नाम पर वंशजों के महिमागान होंगे
जर्जर और रोगग्रस्त होंगे वाक योद्धा
सामाजिक मूल्यों के धनुर्धर

चुपचाप शैया पर पड़े
विचारों के उत्तरायण की प्रतीक्षा करेंगे
छद्‌म कला के तेजस्वी

जो कुछ अभी घटित हो रहा है
वह भी तो मर रहा है
जो मर रहा है वह अपने संग
बहुत कुछ जीवित को लिए जा रहा है

उसके चुपचाप मरने के दूरगामी परिणाम होंगे
मनुष्य के सभी सपने नष्ट होंगे
और मृत्यु उसकी मूर्खता पर हंसेगी।

शर्तें

क्या शर्तें हैं शांत और स्वच्छ जीवन की?

जब प्रदर्शनकारी चमक ने हृदय दो भागों में
चीर दिया हो
तो क्या शर्तें होंगी सहज सरल मानवीय संवाद की?

एक कायर घोड़े की अपनी मृत्यु से भागते हुए
एक जगह की खादर से दूसरी जगह की खादर में
मिचमिची आंखों से अपना कुचलना देखते हुए...

क्या शर्तें हैं एक वेदनारहित धीरे धीरे निकलती सांस की
और करुणा दया से आप्लावित किसी मरती हुई
दुनिया को देखने की?

जहां देश और उसका समाज गड्डमगड्ड हुआ जा रहा है
धन लिप्सा के जलसे में
वहां क्या शर्तें होंगी स्वयं के पीछे हटते हुए
आत्मसमर्पण की??

कुछ समय के लिए

नगण्यों के स्वर्ग में
स्वप्न देखने के अलावा
कोई दूसरा विकल्प नहीं है

अगर उन्होंने पेड़ लगाये हैं
तो फल की आशा करना
इतना निर्मूल भी नहीं है
बादलों के पहाड़ भ्रम पैदा करेंगे
कि इनसे झरने गिरेंगे
बूंदों को हवा के साथ संघर्ष नहीं करना होगा
लेकिन बादलों की तरह नगण्य भी
अपने स्वर्ग में लौटने को विवश होते हैं

कौन निर्बल तुच्छ होना चाहता है?
कौन स्त्री चाहती है दासी बनना?
कौन युवा जीविका के लिए
निर्जीव मशीन जैसा होना चाहता है?

धूर्त विलासिताओं और सुखवाद ने

छीन लिया है असंख्य बच्चों से उनका बचपन
फिर भी एक स्वप्न है उनके मन में
कि चढ़ जायें तनिक ऊपर

कुछ समय के लिए भूल जायें
दुःख अभाव और यातनाएं
जीवन में कुछ अच्छी खबरें हों
समता और न्याय की
अपनी तरह से जीवन जीने की
कुछ स्वतंत्रता और फुरसत हो...

मजहब

यह फल कुछ कच्चा है
इंशाअल्ला, कल तक पक जायेगा
तब ही काटियेगा
बड़े मियां, कल किसने देखा है
न जाने कब खुदा बुला ले
उसे मैं कुछ कुछ उसके मजहब का लगा
बोला, बाबूजी, कहां के हो
किस दीन से हो कि जुम्मे के दिन
मेरी तरह खुदा को याद करते हो
मैंने कहा, न मैं हिन्दू हूं और न मुस्लिम
मैं तो सिर्फ सूफी हूं
खुदा मेरा माशूक है
और मैं राम की बहुरिया हूं।

न जायें

जहां कर्म के फूटे हों और रूप की खाते हों
वहां न जायें

पुलिस की साजिश से तो अदालत भी
झूठी हो जाती है
जहां कोई अफसर मानव अधिकारों की रक्षा करने का
दावा कर रहा हो और नेता उसे

शाबासी देता हो
वहां न जायें

मरते हुए को पूछें नहीं मरने पर याद करें
ऐसे तमाशे से बेहतर है कि घर पर ही रहें

जहां विलासी विनोदी चेहरे अति गम्भीर होकर
परचिन्ता में दुखी नजर आयें
वहां न जायें
क्योंकि परदुख कभी भी इतना पारदर्शी
और चमकीला नहीं होता
एक असंदिग्ध दर्प से भरा है उनका संसार
जो 'सफल' हुए हैं छीनाझपटी के इस कौशल में

न जायें जहां किसी देवता की छवि अंकित हो
निमंत्रणपत्र पर और किसी कुटिल
सम्प्रदायवादी को मुख्य अतिथि बनाया गया हो
कहने दो उसे कि तुम बेहद संकीर्ण
अव्यवहारिक और दकियानूस हो
वह स्वयं एक बहुत गलत आदमी है
कभी अधकचरे युवा या किसी सम्मान लोलुप
बूढ़े के भेष में अपने को दोहराता हुआ
उसे सुनने कदापि न जायें
न जायें।